नया ज्ञानोदय

अक्टूबर-नवम्बर 2025
पृष्ठ 80
मूल्य : 50 रुपये

पूरी औरत की पहली ग़ज़ल
परवीन शाकिर

भारतीय ज्ञानपीठ

एनएमडीसी

NMDC

एनएमडीसी की ओर से

हिन्दी दिवस

की हार्दिक शुभकामनाएँ।

हिन्दी है हमारी शान, देश की एकता का अभिमान

भारत की सबसे बड़ी लौह अयस्क उत्पादक एनएमडीसी इस्पात मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन नवरत्न कंपनी है, जो औद्योगिक प्रगति की जीवन रेखा है।

मानव एवं भूमंडल के लिए उत्तरदायित्वपूर्ण खनन एनएमडीसी की मूल भावना है और इसके लिए यह निरंतर नवाचार के साथ अत्याधुनिक तकनीकों का प्रयोग कर रहा है।

एनएमडीसी लिमिटेड

(भारत सरकार का उद्यम)

पंजीकृत कार्यालय: खनिज भवन, 10-3-311/ए, कैसल हिल्स, मासाब टैंक, हैदराबाद – 500028

सीआईएन: L13100TG1958GOI001674

nmdc.co.in

/nmdclimited

वैज्ञानिक। सुस्थिर। खुशियां बिखेरते हुए

भारतीय ज्ञानपीठ
संस्थापक
श्रीमती रमा जैन
श्री साहू शांति प्रसाद जैन

नया ज्ञानोदय

साहित्य, समाज, संस्कृति और कलाओं पर केंद्रित

सम्पादक
मधुसूदन आनन्द

सह-सम्पादक
महेश्वर, प्रभाकिरण जैन

अंक : 235 | अक्टूबर-नवम्बर 2025

साहू अखिलेश जैन
प्रबन्ध न्यासी, भारतीय ज्ञानपीठ

प्रकाशक : भारतीय ज्ञानपीठ
18, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड,
नई दिल्ली-110 003
फोन : 011-2462 6467, 2469 8417, 4152 3423
ई-मेल : nayagyanoday@gmail.com,
bookclub@jnanpith.net,
gmbharatiyajnanpith@gmail.com

वेबसाइट : www.jnanpith.net

Naya Gyanodaya
A Literary Bi-monthly Magazine
Editor : Madhu Sudan Anand
Language : Hindi
Published by **Bharatiya Jnanpith**
18, Institutional Area, Lodi Road,
New Delhi-110 003

मूल्य :
50 रुपये + 16 रुपये (डाक खर्च)

व्यक्तियों / संस्थाओं के लिए :
वार्षिक (6 अंक) : 400 रुपये (डाक खर्च सहित, साधारण डाक से)
वार्षिक (6 अंक) : 730 रुपये (डाक खर्च सहित, रजिस्टर्ड डाक से)

नया ज्ञानोदय की ई-प्रति www.notnul.com पर उपलब्ध है।

शुल्क 'भारतीय ज्ञानपीठ' (**Bharatiya Jnanpith**) के नाम से, उपर्युक्त पते पर चेक या बैंक ड्राफ्ट के माध्यम से भेजें।

© सर्वाधिकार सुरक्षित
प्रकाशित सामग्री के उपयोग के लिए लेखक, प्रकाशक की अनुमति आवश्यक है। प्रकाशित रचनाओं के विचार से भारतीय ज्ञानपीठ का सहमत होना आवश्यक नहीं। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अन्तर्गत विचारणीय।

आवरण व साज-सज्जा : महेश्वर, भीतरी रेखांकन : आस्था चौहान

www.jnanpith.net

स्कूल पेयरिंग
शिक्षा की नई दिशा
क्या है स्कूल पेयरिंग ?
राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के तहत विद्यालयों को आपस में जोड़ा जा रहा है, ताकि संसाधनों का साझा उपयोग हो सके, शिक्षण गुणवत्ता में सुधार और बच्चों को बेहतर शैक्षिक वातावरण मिल सके।
पेयरिंग के प्रमुख लाभ
• प्री-प्राइमरी से उच्च प्राथमिक तक निर्बाध शिक्षा
• विद्यालय के संसाधनों का बेहतर उपयोग
• छात्र-अध्यापक अनुपात बेहतर होगा
• ग्रेड लर्निंग एवं पियर लर्निंग से छात्र नामांकन में वृद्धि
• सामूहिक खेल, भाषण, नाटक, क्विज आदि प्रतिस्पर्धाएं
• डिजिटल और 21वीं सदी अनुकूल कौशलों का विकास
• प्राथमिक/उच्च प्राथमिक विद्यालयों में स्मार्ट क्लास, खेल मैदान, कम्प्यूटर लैब जैसी सुविधाएं
गुणवत्तापूर्ण, समावेशी और आनंददायक शिक्षा की दिशा में उत्तर प्रदेश की उपलब्धियाँ
• ऑपरेशन कायाकल्प
विद्यालयों में 19 मानकों पर संतृप्तीकरण
• डी. बी. टी.
यूनीफार्म, बैग, स्टेशनरी के लिए ₹1200/छात्र
• निपुण विद्यालय
48,061 विद्यालय निपुण घोषित
• ASER/NAS की रिपोर्ट
गुणवत्तापूर्ण शिक्षा में उल्लेखनीय वृद्धि, उत्तर प्रदेश टॉप-10 में सम्मिलित
• ट्रेनिंग
शिक्षकों की क्षमता में निरंतर संवर्द्धन
अन्य राज्यों में विद्यालयों की संविलियन संबंधी पहल
राजस्थान, मध्य प्रदेश, ओडिशा, झारखंड, हिमाचल प्रदेश और असम
यहां क्या पड़ा प्रभाव?
बच्चों के नामांकन में वृद्धि • शिक्षकों की बेहतर तैनाती
बच्चों की उपस्थिति में सुधार
भ्रम न पालें
• पेयरिंग से किसी स्कूल को बंद नहीं किया जा रहा
• स्कूल का प्री-प्राइमरी/बालवाटिका के रूप में उपयोग
• शिक्षकों के पद में कहीं भी कोई कमी नहीं की जाएगी
भविष्य की तैयारी
मुख्यमंत्री अभ्युदय कम्पोजिट विद्यालय
(प्री-प्राइमरी से कक्षा 8 तक)
₹1.42 करोड़ से स्मार्ट क्लास, पुस्तकालय, कंप्यूटर लैब, डायनिंग हॉल, सीसीटीवी, ओपन जिम
मुख्यमंत्री मॉडल कम्पोजिट विद्यालय
(प्री-प्राइमरी से कक्षा 12 तक)
₹30 करोड़ से 1,500 छात्र-क्षमता, 30 स्मार्ट कक्षाएं, विज्ञान प्रयोगशाला, डिजिटल लाइब्रेरी, कौशल विकास केंद्र, खेल मैदान
काम दमदार डबल इंजन सरकार
सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश

साहित्य, समाज, संस्कृति और
कलाओं पर केन्द्रित

अंक : 235
अक्टूबर-नवम्बर 2025
पृष्ठ : 84 (आवरण सहित)

www.jnanpith.net

अनुक्रम

रोमिला थापर

इरफ़ान हबीब

जानकीप्रसाद शर्मा

मोपासां

प्रज्ञा

सईदा गज़दर

आलेख
पूरी औरत की पहली ग़ज़ल : परवीन शाकिर : जानकीप्रसाद शर्मा / 04
हिंदी नवजागरण और स्त्री : सुधा सिंह / 08

व्याख्यान
10 साल में विश्वविद्यालयों की दुर्दशा हो गई : रोमिला थापर / 12
कम्युनिस्ट अपनी व्याख्या संशोधित करें : इरफ़ान हबीब / 13

नोबेल पुरस्कार
आपदा के असीम धैर्य की टहनी पर काँपता आख़िरी पत्ता : त्रिभुवन / 15

कहानी
गर्दिश में हों तारे... : प्रज्ञा/ 19
मेरे हिस्से की मृत्यु : विवेक आसरी / 31
गिंदू बोलता है, तो करता है : रणीराम गढ़वाली/ 37

कविता
शिवप्रसाद जोशी / 44
प्रभात / 46
विपिन चौधरी / 48

पाकिस्तानी उर्दू कहानी
चढ़ावे की चादर : सईदा गज़दर / 50

पुर्तगाली कहानी
अनजाने द्वीप की कथा : जोसे डिसूज़ा सारामागो / 55

फिलिस्तीनी कहानी
अपने घर की चाभी : अनवर हामिद / 63

फ्रेंच कहानी
मैडम बैपटिस्ट : मोपासां / 65

मोहन राकेश की डायरी पर एकाग्र
कितने अकेले-अकेले से दिन निकलते हैं : कुबेर कुमावत/ 68

सिनेमा
दरकते समय में ऋत्विक घटक का सिनेमा : कुमारी उर्वशी / 72

यात्रा-वृतान्त
आइफ़िल टावर : अरुण जी व बन्दना / 77

ज्ञान गरिमा के 81 वर्ष
भारतीय ज्ञानपीठ

पूरी औरत की पहली ग़ज़ल : परवीन शाकिर

जानकीप्रसाद शर्मा

जानकीप्रसाद शर्मा

समकालीन हिंदी-उर्दू साहित्य के प्रमुख आलोचकों में से एक हैं। उन्होंने आलोचना को तार्किक और वैज्ञानिक दृष्टि से समृद्ध किया है। उनकी आलोचना में साहित्यिक मूल्यों की गहन पड़ताल, भाषा की संवेदनशीलता और समाज से जुड़ाव स्पष्ट दिखाई देता है। वे साहित्य को केवल सौंदर्यबोध का माध्यम न मानकर जीवन और यथार्थ से जोड़ते हैं। सहज और प्रवाहपूर्ण शैली में लिखी उनकी आलोचनात्मक कृतियाँ शोधकर्ताओं और पाठकों के लिए मार्गदर्शक सिद्ध हुई हैं। हिंदी व उर्दू साहित्य के परस्पर अनुवाद के लिए भी उनकी ख्याति रही है।

मो. 9811517897
ई-मेलः
jphindiurdu@gmail.com

पाकिस्तान की शाइरी में निस्वानी आवाज़ यानी स्त्री-स्वर की प्रभावशाली उपस्थिति रही है। ज़ोहरा निगाह, किश्वर नाहीद, फ़हमीदा रियाज़, सारा शगुफ़्ता, नसरीन अंजुम भट्टी, अज़रा अब्बास, शाइस्ता हबीब, सर्वत ज़ोहरा और हुमैरा रहमान आदि की रचनाएँ स्त्री-स्वर के हस्तक्षेप के सातत्य की निशानदेही करती हैं। इस परम्परा के बीच परवीन शाकिर (1952-1994) अपने विशिष्ट शे'री रवैए और बेबाक लहजे की बिना पर अपनी एक अलग शनाख़्त क़ायम करती हैं। वह लहजा जिसमें शाइस्तगी और सौम्यता तो है लेकिन लाचारगी और विलाप नहीं। स्त्री के रूप में भरे-पूरे अस्तित्व को महसूस न कर पाने के कारणों की तलाश करते हुए उनकी नज़र सामाजिक मूल्य-पद्धति पर जाती है जिसके अनुसार पराजय ही स्त्री जीवन की नियति है। सच की पराजय और झूठ की जीत की यह विडंबना शायरा को उद्वेलित करती है:

मैं सच कहूँगी मगर फिर भी हार जाऊँगी
वो झूठ बोलेगा और लाजवाब कर देगा

बज़ाहिर इस शे'र से पुरुष प्रधान समाज का बिम्ब उभरता है, जो स्त्री पर पुरुष की बरतरी को अनुमति देता है। लेकिन अच्छी कविता का संवेदनात्मक विस्तार मूल संदर्भ से बहुत दूर तक जाता है। स्त्री-पुरुष संबंधों के दायरे से बाहर आकर देखें तो ये शे'र हमारे मौजूदा सामाजिक-राजनीतिक परिदृश्य की विडंबना का रूपक रचता है, जहाँ झूठ का सच को लाजवाब करना रोज़ का मामूल है। शे'र से यह संकेत भी उभरता है कि सच को कहते रहना है, शिकस्त के बावजूद। ग़रज़ यह कि परवीन शाकिर की शाइरी स्त्री को उसकी छीनी हुई भाषा लौटाती है। वह भाषा जिसमें उसका पूरा वुजूद हँसता-बोलता हुआ नज़र आये।

परवीन शाकिर की निजता इस बात में भी है कि वस्तु के स्तर पर उनके विषय सीमित हैं। वे अपने तीव्र बोध और गहन निरीक्षण के साथ-साथ खुले-खिले अंदाज़े बयाँ की बिना पर सीमित विषयों में कहने के लिए बड़ा स्पेस निकाल लेती हैं। विषयों की बात करें तो स्त्री मन के संदेह, असफल प्रेम की ख़लिश, अपने स्त्रीत्व को परिभाषित करना और स्त्री की मुक्ति आकांक्षा–इन तमाम विषयों के केन्द्र में स्त्री जीवन से जुड़े भाव-विचार हैं। इन सीमित विषयों की राह से उनकी शाइरी हमारे समाज की तल्ख़ सच्चाइयों तक ले जाती है। उन्होंने नये बनते हुए समाज में अपनी जगह तलाश करती स्त्री की जद्दोजहद को लफ़्ज़ों का जामा पहनाया है। इस तरह वे एक नई स्त्री का तसव्वुर पेश करती हैं जो स्त्री के रूढ़ मिथक को तोड़ कर सामाजिक प्रक्रिया का हिस्सा बन जाने को उद्यत है। वरिष्ठ तरक़्क़ीपसंद शाइर व कथाकार अहमद नदीम क़ासमी ने कहा है कि, "परवीन की शाइरी ग़ालिब के शे'र 'फूँका है किसने गोशे-मुहब्बत में ऐ ख़ुदा / अफ़सूने इंतिज़ार, तमन्ना कहें जिसे' का विस्तार है। तमन्ना करने यानी इंतिज़ार करते रहने के इस तिलिस्म ने होमर से लेकर ग़ालिब तक की तमाम ऊँची-सच्ची और खरी शाइरी को प्रेरित किया है।"

शे'र का भाव यह है कि ऐ ख़ुदा, मुहब्बत के कान में यह आवाज़ किसने फूँक दी है कि इस पर एक जादू-सा हो गया और इस बात से बेखबर कि यह तमन्ना कभी पूरी नहीं होगी, वह इंतिज़ार में बैठी है। 'मुहब्बत' शब्द यहाँ रचनाकार के 'स्व' को प्रतिकित करता है। ध्यान से देखें तो यह इंतिज़ार, यह तमन्ना परवीन शाकिर की शाइरी में मौजूद स्त्री की जिजीविषा को बल देती है। तमन्ना-की सादगी देखिए:

शाख़े-बदन को ताज़ा फूल निशानी दे
कोई तो हो जो मेरी जड़ों को पानी दे

अपने सारे मंज़र मुझसे ले ले-और
मालिक! मेरी आँखों को हैरानी दे

और यह तमन्ना उन्हें उस मक़ाम तक ले जाती है जहाँ जीवट और आत्मविश्वास से लबरेज़ स्त्री को हम पाते हैं जिसके अस्तित्व का एक-एक कण स्वार्जित है। 'वर्किंग वूमैन' नज़्म की कुछ पंक्तियाँ हैं:

सब कहते हैं
कैसे ग़ुरूर की बात हुई है
मैं अपनी हरियाली को खुद
अपने लहू से सींच रही हूँ
मेरे सारे पत्तों की शादाबी
मेरी अपनी नेक कमाई है
मेरे एक शिगूफ़े पर भी
किसी हवा और बारिश का बाल बराबर क़र्ज़ नहीं है
मैं जब चाहूँ खिल सकती हूँ
मेरा सारा रूप मेरी अपनी दरियाफ़्त है

इस भाव-भूमि की रचनाएँ लिखते हुए वे अपनी वरिष्ठ समकालीन और 'पत्थर की ज़बान' की शाइरा फ़हमीदा रियाज़ को याद करती हैं। उनकी 'मस्अला' शीर्षक नज़्म फ़हमीदा को ही समर्पित है।

रूमान या प्रेम के तरल भावों के बग़ैर परवीन का शे'री जहान मुकम्मल नहीं होता। रूमान की छाँव उन्हें आत्मकेंद्रण की ओर नहीं ले जाती बल्कि बाहर की धूप का एहसास कराती रहती है। उन्होंने बताया है कि 'इस नए सफ़र में भी काम धूप ही आई।' उनकी शाइरी रूमान निगारी और हक़ीक़त निगारी की प्रचलित श्रेणियों को अस्वीकार करती है। उनका रूमान युवामन की अभिलाषाओं का तर्जुमान है। विशेष रूप से कैशोर्य से आयु के अगले सोपान पर क़दम रखती लड़कियों की दिलकश अक्कासी में उन्हें महारत हासिल है। इस्म (संज्ञा) शीर्षक संक्षिप्त नज़्म और दो शे'रों से इस बात की पुष्टि हो जायेगी:

बहुत प्यार से
बाद मुद्दत के
जब से किसी शख़्स ने चांद कह कर बुलाया है
तब से
अंधेरों की ख़ूगर निगाहों को
हर रोशनी अच्छी लगने लगी है!

इसी भाव भूमि के आसपास ग़ज़ल के दो शे'र मुलाहिज़ा कीजिए

हुस्न के समझने को उम्र चाहिए जानाँ
दो घड़ी की चाहत में लड़कियां नहीं खुलतीं

लड़कियों के दुख अजब होते हैं सुख उनसे अजीब
हँस रही है और काजल भीगता है साथ-साथ

परवीन शाकिर अपने समय के प्रति जागरूक रचनाकार हैं। उनकी शाइरी असहमति की शाइरी है। प्रभावी मूल्य-व्यवस्था से असहमति क्रूर हालात के दबावों में प्रतिरोध की शक्ल अख़्तियार कर लेती है जिसकी कई तरफ़ें यानी आयाम हैं। यह बात ध्यान देने योग्य है कि वह कुछ वर्षों तक कॉलेज में अंग्रेज़ी पढ़ाने के बाद पाकिस्तानी सिविल सर्विस में आ गई थीं। यह जनरल ज़ियाउल हक़ के मार्शल लॉ और तानाशाही का दौर था। 1977 से क़रीब 10 वर्षों तक यह दौर जारी रहा। उनका पहला संग्रह तो इसकी शुरुआत में 1976 में आ चुका था। पहले संग्रह 'ख़ुशबू' के बाद 'सदबर्ग' 1980 में और 'ख़ुदकलामी' व 'इनकार' 1990 में प्रकाशित हुए। यानी उनका अधिकांश लेखन तानाशाही और अराजकता के कालखंड में सामने आया। सिविल सर्विस में रहते हुए उन्होंने सामाजिक न्याय के प्रति अपनी बुनियादी प्रतिबद्धता को क़ायम रखा। चाहे वह स्त्री जीवन से वाबस्ता सवाल हों या व्यापक मानवीय सरोकार–हर सतह पर वे एक सार्थक हस्तक्षेप की मुद्रा में नज़र आती हैं। यह ज़रूर है कि उनकी रचनाएं जनांदोलनों में शरीक और स्पष्ट राजनीतिक संबद्धता वाले रचनाकारों की भांति ऊंची आवाज़ में नहीं बोलतीं। लेकिन अपना पक्ष रखने में नहीं हिचकतीं। इनके उत्प्रेरक सामाजिक घटनाओं में हैं, लेकिन ये घटनाएं सीधे दर्ज नहीं हैं बल्कि उनके संवेदनात्मक प्रभाव दर्ज हैं। इन रचनाओं से जो प्रतिरोध का स्वर उभरता है वह ज़बानो-बयान के हुस्न के कारण दिलो-दिमाग़ को ज्यादा छूता है और हमें भीतर से बदलने का सामर्थ्य रखता है। एक ग़ज़ल के तीन शे'रों से बखूबी यह अंदाज़ा हो जाएगा:

पा-ब-गिल सब हैं रिहाई की करे तदबीर कौन
दस्तबस्ता शहर में खोले मेरी ज़ंजीर कौन
मेरा सर हाज़िर है लेकिन मेरा मुंसिफ़ देख ले
कर रहा है मेरी फ़र्द-ए-जुर्म को तहरीर कौन
सच जहां पाबस्ता मुल्ज़िम के कटहरे में मिले
उस अदालत में सुनेगा अद्ल की तफ़्सीर कौन

पहला शे'र: पा-ब-गिल अर्थात् कीचड़ में धँसे हुए पैर। सभी के पैर कीचड़ में धँसे हुए हैं। सब बेबस हैं। मेरी मुक्ति की उम्मीद ऐसे में किससे की जाए?

दूसरा शे'र: फ़र्द-ए-जुर्म अर्थात् अपराधों का रजिस्टर या सूचीपत्र। मैं कोई भी सज़ा पाने को तैयार हूँ लेकिन इंसाफ़ करने वाला व्यक्ति (मुंसिफ़) एक बार ज़रा यह ज़रूर देख ले कि मेरे अपराधों की यह सूची किसने बनाई है? सच यह है कि जो स्वयं अपराधी हैं उन्होंने निरपराध लोगों पर झूठे इल्ज़ाम लगाने का ठेका ले रखा है।

तीसरा शे'र: पाबस्ता मुल्ज़िम अर्थात् वह अभियुक्त जिसके पैर बँधे हुए हैं। अद्ल की तफ़्सीर अर्थात् न्याय की व्याख्या। सूरते हाल यह है कि जिस अदालत में सच को पैर बाँधकर कटहरे में खड़ा कर दिया गया हो, वहां न्याय की व्याख्या अगर की भी जाये तो कौन सुनेगा? भाव यह है कि तमाम न्याय-व्यवस्था झूठ पर टिकी हुई है।

वे चुप्पी को अत्याचार और अन्याय का समर्थन मानती हैं। चाहे वह स्त्री पर पुरुष का अत्याचार हो या अवाम पर सत्ता का। अत्याचार के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाना ज़मीर के ज़िंदा रहने की अलामत है: